Part I How.

दंतिदुर्ग पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें?

Q. II Write a short note on Dantidurga.

Pg

दन्तिदुर्ग ⟶

दंतिदुर्ग राष्ट्रकूट वंश का महा प्रतापी राजा था जो अपने पिता इन्द्र प्रथम के मरने के बाद सिंहासन पर बैठा। वह बड़ा पराक्रमी तथा दूरदर्शी शासक था। राष्ट्रवंश की स्वतन्त्रता तथा महत्ता की स्थापना सबसे पहले इसी ने की थी।

दंतिदुर्ग सिंहासन पर बैठते ही तत्कालिन राजनीतिक परिस्थिति का अध्ययन किया और एक निश्चित योजना के आधार पर उससे पुरा-पुरा लाभ उठाया। सिन्ध के मुस्लिम शासकों के निरन्तर आक्रमणों ने गुजरात और के राज्यों को निर्बल बना दिया था। चालुक्यों और पल्लवों के पारस्परिक वैमनस्य से दोनों ही राज्य अशक्त हो रहे थे। दंतिदुर्ग ने इस स्थिति का योग्यता पूर्वक उपयोग किया। यही नहीं पल्लव वंश के भीतर होने वाले गृहयुद्ध ने भी पल्लव राजनीति में प्रवेश पाने का अवसर प्रदान किया।

Scanned with CamScanner

दंतिदुर्ग ने उस अस्थिर वातावरण में अनेक नीतियों से काम लिया। अपनी कूटनीति व संधियों एवं अभियानों की सहायता से दंतिदुर्ग ने अपने पिता के समस्त राज्य को चारों ओर एक विशाल राज्य में परिवर्तित कर दिया।

प्रारम्भ में दंतिदुर्ग अपने पिता की भांति चालुक्य नरेश का सामंत था। 752 ई० के एलोरा के लेख में उसे एक मात्र महासामंताधिपति कहा गया है। 745 ई० में चालुक्य नरेश विक्रमादित्य द्वितीय की मृत्यु हो गयी इस स्थिति के पश्चात् दंतिदुर्ग ने अपनी स्वतंत्रता घोषित की होगा। 754 ई० के समंगढ लेख में उनके लिए महाधिराज की उपाधि का प्रयोग किया गया है।

दंतिदुर्ग ने प्रमुखतया निम्नलिखित राज्यों के विरुद्ध सफलता प्राप्त की थी। यह भी सम्भव है कि इनमें से कुछ युद्ध उसने चालुक्य नरेश के सामंत के रूप में लड़े हो।

सिंध → 738 ई० के लगभग चालुक्य नरेश विक्रमादित्य और पुलकेशिन ने सिंध के अरबों के विरुद्ध युद्ध किया। इसमें दंतिदुर्ग ने भी भाग लिया। इसमें अरबों की भारी पराजय हुई और भविष्य में उसने फिर कभी गुजरात पर आक्रमण नहीं किया। दंतिदुर्ग की सहायता को स्वीकार करते हुए चालुक्य नरेश ने दंति-दुर्ग को "पृथ्वी वल्लभ" की उपाधि दी।

कोशल → अनेक अभिलेखों से प्रगट होता है कि दंतिदुर्ग ने कोशल नरेश उदयन को पराजित किया था। उधर उदयेन्दिरम् ताम्रपत्रों का कथन है कि पल्लव नरेश नंदीवर्मा II ने भी उदयन को पराजित किया और उसे बंदी बना लिया था। इन दो प्रकार के कथनों के आधार पर अनुमान किया जा सकता है कि दंतिदुर्ग और

नन्दीवर्मा II ने सम्मिलित रूप से कोशल नरेश को पराजित किया था। डुब्रिआ महोदय का मत है कि दंतिदुर्ग ने पल्लव नरेश को साथ संधि ही नहीं की थी वरन् उसके साथ अपनी पुत्री रेवा का विवाह भी कर दिया था। परन्तु विवाह के पक्ष में निश्चित प्रमाण नहीं मिलते हैं बाहुर ताम्रपत्रों का यह कथन अवश्य है कि रेवा राष्ट्रकूट राजकुमारी थी और उसका विवाह नन्दी वर्मा के साथ हुआ था। परन्तु यह रेवा राष्ट्रकूट नरेश दंति-दुर्ग की पुत्री थी ऐसा कहीं नहीं लिखा हुआ है। पुनः बाहुर ताम्रपत्रों में उल्लेखित दंतिवर्मा नंदिवर्मा का पुत्र था। जबकि दंति-दुर्ग का समकालिन पल्लव नरेश नन्दिवर्मा द्वितीय परमेश्वर वर्मा अथवा हिरण्य का पुत्र था।

3. **मध्य प्रदेश** → यहाँ बालाघाट के आसपास के प्रदेश में शैलवंश के राजा जयवर्द्धन प्रथम राज्य करता था। रघोली ताम्रपत्रों में इस 'परमेश्वर महाराजाधिराज, सकल विन्ध्याधिपति कहा गया है। उदयेन्दिरम ताम्रपत्रों से प्रगट होता है कि इसने अश्वमेध यज्ञ करने का आयोजन किया था। इसे भी दंति-दुर्ग और पल्लव नरेश नन्दीवर्मा द्वितीय सम्मिलित रूप से पराजित किया था।

4. **कांची** → वहाँ पल्लव नरेश परमेश्वर वर्मा का राज्य था। नंदिवर्मा उसका पुत्र न था। सम्भवतः वह राष्ट्रकूट की उपशाखा का राजकुमार था और उसने बलात् परमेश्वर वर्मा अथवा उसके किसी उत्तराधिकारी से राज्य छीन लिया था। सम्भवतः दंति-दुर्ग ने पल्लवों से इस गृहयुद्ध में भाग लेकर नन्दीवर्मा की सहायता की थी। यही कारण है कि दशावतार गुहालेख में दंति-दुर्ग को कांची नरेश का विजेता कहा गया है।

5. **चालुक्य राज्य** → सिंध के मुस्लिम राज्यों के निरन्तर आक्रमणों के परिणाम स्वरूप चालुक्य राज्य निर्बल हो गया था। दंति-दुर्ग ने इस निर्बलता से लाभ उठाकर और धीरे-धीरे चालुक्य राज्य के अधिकांश प्रदेशों पर अधिकार कर लिया। सर्वप्रथम उसने चालुक्यों के अपोलाट और सिंध प्रदेशों को हस्तगत किया

खानदेश और अपने भतीजे कर्क द्वितीय को अपना गवर्नर नियुक्त
नासिक किया। इस पश्चात उसने सम्पूर्ण महाराष्ट्र को जीता
पूना समगढ़ आदि लेखों में उसके द्वारा वल्लभ की
सतारा पराजय का उल्लेख है। इस विजय से दंतिदुर्ग
कोल्हापुर के हाथ में खानदेश, नासिक, पूना, सतारा और कोल्हापुर के जिले आ गये। अब चालुक्य राज्य बादामी के आस-पास के प्रदेश पर ही रह गया।

6 उज्जैन → यहां गुर्जर प्रतिहार वंश का राजदेवराज
राजदेव का राज्य था। सम्भवतः दंतिदुर्ग ने उसे पराजित किया। संजन ताम्रपत्रों का कथन है कि दंतिदुर्ग ने उज्जैन में हिरण्य गर्भदान किया था। उस समय गुर्जर नरेश उसका प्रतिहार बना था।

7. कुछ ग्रन्थ अभिलेखों से दंति-दुर्ग की कलिंग की शैल और टंक प्रदेशों की विजय भी सिद्ध
मालवा होती है। समगढ़ ताम्रपत्रों से प्रगट होता है कि
बादामी उसकी सेनाओं ने अद्री, महानदी, और रेवा नदियों
सिन्धु की घाटियों में युद्ध किये थे। दशावतार गुहा लेख में भी महाराज शर्व की लाट, मालवा, बादामी, सिन्धु आदि प्रदेशों के विजय का वर्णन है। इसमें यह नहीं
कीलहर्न कहा गया है कि यह शर्व कौन था। कीलहर्न महोदय का मत था कि यह शर्व राष्ट्रकूट वंश का राजा अमोघवर्ष था। परन्तु
अल्तेकर डा० अल्तेकर ने इसका खंडन किया है। वे शर्व को दंतिदुर्ग मानते हैं। इस दशावतार लेख में दंति-दुर्ग पराजित हुआ सिन्धु भूप का उल्लेख है। वास्तव में सिन्धु भूप समझना चाहिए।

अपनी अनेक विजयों के परिणामस्वरूप दंतिदुर्ग ने महाराजाधिराज परमेश्वर और परमभट्टारक की उपाधियां धारण की थीं। उसकी मृत्यु लगभग 738 ई० के समय राष्ट्रकूट राज्य एक विशाल स्वतंत्र राज्य बन गया।

दंतिदुर्ग ब्राह्मण धर्मावलम्बी था। उज्जैन में उसने जो हिरण्य गर्भदान किया था वह इस कथन का प्रमाण है कि इस अवसर पर उसने रथ सप्तमी के दिन अपने को सोने से तौलवाता और उस सोने को ब्राह्मणों में बांट देता।

समगढ़ ताम्रपत्रों से प्रगट होता है कि उसने अपनी राजमाता के इच्छानुसार अनेक भूखण्ड ब्राह्मणों को दान दिये थे।